



**Original Article**

**21 वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित पारिवारिक समस्याएं**

**डॉ. जाविद शमशुद्दीन शेख**

सहायक प्राध्यापक

कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, उरुण-इस्लामपुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130314

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 65 - 67

Submitted: 18 Jan.2026

Revised: 24 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. जाविद शमशुद्दीन शेख

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785394

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785394>



Creative Commons



**सार:**

21वीं सदी की पारिवारिक समस्याओं में पारिवारिक विघटन, महानगरीय जीवन-शैली और पति-पत्नी के बीच बढ़ती जा रही संवेदनहीनता पर केंद्रित है। एक जमाना था, जब परिवार के सभी सदस्य मिलजुल कर रहते थे, त्यौहार मनाते थे। जिससे परिवार की खुशियां द्विगुणित हो जाती थी। लेकिन आज परिवार विघटित हो चुके हैं। संबंधों में दरारें आ चुकी है। उस जमाने में प्यार, स्नेह, विश्वास कायम था आज यह सब गायब हो चुका है। प्यार का रूप विकृत हो चुका है। मां-बाप अपने करियर के कारण बच्चों का करियर बिगाड़ रहे हैं। मां-बाप का बच्चों के प्रति स्नेह कम होता जा रहा है। वृद्धों की उपेक्षा हो रही है। शादी-ब्याह की अपेक्षा आज के युवा 'लिव्ह इन रिलेशनशिप' में रहना अधिक पसंद करते हैं। युवा वर्ग मोबाइल में ही जीवन व्यतीत कर रहा है ना उसके परिवार वालों को और न ही उसे अपने करियर की चिंता है इंटरनेट के बहाने लाखों रूपयों की बर्बादी हो रही है आज की शिक्षा व्यवस्था ही ऐसी है कि किसी परिवार में पढ़े-लिखे और विशेष प्रविण्यप्राप्त छात्रों को नौकरी के तलाश में दर-दर भटकना पड़ रहा है उन्हें सही रास्ता और दिशा नहीं मिल रही है इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में आदमी आदमी को भूल बैठा है

**मुख्य शब्द:** कविता, परिवार, समस्या, अस्तित्व

**Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)**

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

**How to cite this article:**

डॉ. जाविद शमशुद्दीन शेख. (2026). 21 वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित पारिवारिक समस्याएं. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 65 - 67. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785394>

**प्रस्तावना:**

21वीं सदी की कविता विघटित होते परिवारों के कारणों को ढूंढने का प्रयास करती दिखाई देती है इन कविताओं में न केवल इसके कारणों की तलाश है बल्कि वह उसके निष्कर्ष तक पहुंचाने का प्रयास करती दिखाई देती है दिन-ब-

दिन महंगाई बढ़ती जा रही है निम्न वर्गीय परिवारों के लिए एक वक्त की रोटी का प्रश्न दिन-ब-दिन और बड़ा होता जा रहा है इस संदर्भ में भगवान दास रावत की “कुछ हुआ इस तरह” कविता महत्वपूर्ण है इसी तरह राम सिंह, अधेड़ नैनीताल, अधेड़बून जैसी कविताएं भी इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है



मां-बाप की व्यस्तता के कारण बच्चे अकेलेपन से जूझ रहे हैं इन कवियों ने इसे बिना हिचकीचाहट के प्रस्तुत किया है जिसमें परिवार के अपने कहलानेवाले रिश्ते नातो में बिखराव से लेकर प्रेम विवाह और उससे भी आगे चलकर लिंक्ड इन रिलेशनशिप की बात उठाई गई है असल में इस युग की कविताएं अपने समय की सच्चाई की अभिव्यक्ति है परिवारों में किस सदस्य की जिम्मेदारी क्या है यह सोचने विचार करने तक उन्हें समय नहीं है फिर जिम्मेदारी निभाने की बात ही कहाँ है

### **21वीं सदी की हिंदी कविताओं में चित्रित पारिवारिक समस्याएं:**

पारिवारिक समस्याओं के मूल में परिवार के सदस्य ही हैं हम सब और हमारे अपने ही हैं संयुक्त परिवार में रहना, नसीहतें सुना, मानना और अपनाना किस-किस को पसंद है प्रत्येक व्यक्ति का स्वतंत्र अस्तित्व है लेकिन मिल-जुल कर रहने का मजा ही कुछ और है इस बात को हम लोग समझ ही नहीं रहे हैं हम वही करते हैं जो मन में आए एक और विवाह के पश्चात भी नारी को मां का बोझ नहीं चहीये तो दूसरी ओर 'टेस्ट ट्यूब बेबी', 'सुरोगेसी' या उससे आगे जाकर नाजायज औलादों को जन्म दे रही हैं क्या इसका कारण यह तो नहीं कि हम संस्कार भूल रहे हैं हमें किसी की दखलअंदाजी पसंद नहीं है हमें अकेलापन और स्वतंत्रता चाहिए इस बात पर हमें अधिक गौर करना चाहिए क्या पारिवारिक समस्याओं पर आज तक लिखा नहीं गया क्या पारिवारिक समस्याओं पर चर्चासत्रों का आयोजन नहीं किया गया क्या पारिवारिक समस्याओं का हल खोजने के प्रयास नहीं किए गए बेशक यह सब हुआ लेकिन समस्याएं कम नहीं हुईं नारी चार दीवारों से बाहर आकर पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर काम करने लगी स्वदेश में ही नहीं तो विदेश में भी नौकरियां करने लगी किंतु वहां भी उस पर

अन्याय हो रहा है ऑफिस में उसे बॉस की मर्जी के मुताबिक रहना पड़ता है तो घर लौटने के पश्चात पति की मर्जी के मुताबिक वृद्धों की उपेक्षा यह एक अलग ही समस्या निर्माण हो चुकी है दिन-ब-दिन यह समस्या और गंभीर रूप धारण कर रही है अपने ही बहू बेटों को घर में वृद्धों का रहना, उनके अचार विचार, उनकी रहन-सहन और नसीहत बिल्कुल भी पसंद नहीं है भाग- दौड़ भरी जिंदगी और नौकरी के बहाने बच्चे किसी महानगर में जाकर बस जाते हैं घर में वृद्ध अकेलापन महसूस करते हैं इस दृष्टि से अनिरुद्ध अनिरुद्ध उम्मत की "कहा गया जो अभी आता हूँ" कविता की पंक्तीया महत्वपूर्ण है "अपना जाने कैसा आता कैसा पता"

वृद्धों को विभिन्न समस्याओं से जूझना पड़ता है कोई बीमारी का शिकार होता है तो कोई और किसी बात का बच्चे अगर कहीं दूर नौकरी के लिए गए हैं और मां-बाप बीमार हैं तो उन्हें रुपए तो भेजते हैं किंतु उनके अपने माता-पिता के प्रति संवेदनहीनता दिखाई देती है महानगरों में बड़ी-बड़ी इमारत की वजह से आंगन खत्म हो चुके हैं बच्चों की चहल-पहल दिखाई नहीं देती है प्यार का केवल दिखावा मात्र किया जा रहा है टेलीविजन और मोबाइल एक और मनोरंजन तो दूसरी ओर सिरदर्द बन चुका है इंटरनेट के बहाने लाखों रूपयों की बर्बादी हो रही है इस बात को आज का युवा वर्ग नहीं समझ रहा है इंटरनेट के कारण शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति जरूर हुई फिर भी बेरोजगारी की संख्या अधिक है इसे भी ध्यान में रखना आवश्यक है प्राचीन युग में नई समस्याओं की नई समस्याओं को सुलझाने की कोशिश लगातार हो रही है हवास की शिकार हुई नारी पहले "कोठेवाली" कहलाती थी अब "बार-बाला" कहलाती है क्या परिवर्तन हुआ हमें सोचना चाहिए डॉ रंजना राजदान नारी समस्याओं के संदर्भ में लिखती है-



“ 21वीं सदी में प्यार की कीमत लगाने का चलन चालू है”

राम सिंह यादव ‘हर्ष’ कबीर की तर्ज पर समाज में फैली तमाम विकृतियों पर तीखा प्रहार करते हैं दहेज प्रथा उन्मूलन, कानून है और दहेज को लेकर आज भी लड़कियों को कहीं जला दिया जाता है कहीं घर से निकाल दिया जाता है

21वीं सदी का कवि यह भी महसूस करता है जो नौजवान व्यवस्था के प्रति कभी आवाज उठाते थे, विद्रोह गीत लिखते थे, दंगाइयों पर अपने बलबूते लड़ते थे और कभी लड़ने की हिम्मत रखते थे अब बेहद चुप हो चुके हैं और कोई

किसी तरह की आवाज नहीं उठाता है इस संदर्भ में संजय कुंदन जी लिखते हैं –

“यह धरती/ पेड़/ आकाश  
उससे हिसाब मांगेगा”

आज लिंग भेद के कारण भ्रूणहत्या जैसी समस्या निर्माण हो चुकी है 21वीं सदी की कविता इस समस्या को भी नजरअंदाज नहीं करती पिता की जिम्मेदारी की औकात न होने के कारण व्यक्ति असफल रह जाता है इस संदर्भ में इब्बार रब्बी की काव्य पंक्तियां बहुत महत्वपूर्ण है-

“आसान है पिता बनना, पर कठिन है पिता होना”